eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

यज्ञ के मनोसंवेदनात्मक आयामों का अध्ययन

विद्या सिंह [1]

[1] शोध विध्यार्थी, मनोविज्ञान विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड,

*CORRESPONDENCE
Address Department of Psychology, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand, India-249411.
Phone +91 9258369618
Email vidhya.singh93@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2022 VIDYA SINGH
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

सारांश: यज्ञ भारतीय ऋषियों द्वारा खोजी गई एक प्राचीन विधा है जिसका उद्देश्य मनुष्य से लेकर प्राणीमात्र का सार्वभौमिक कल्याण है। पारम्पारिक दृष्टि से यज्ञ को धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुष्ठानों तथा कर्मकाण्डों की एक विशिष्ट प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, परन्तु तात्त्विक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से यज्ञ एक सुसमृद्ध विज्ञान है, जो व्यष्टि एवं समष्टि जीवन का सम्पूर्णता में पोषण करता है। यज्ञ के कर्मकाण्डीय एवं धार्मिक स्वरूप से तो हम सब प्रायः परिचित है लेकिन यज्ञ का जो दूसरा पक्ष, जिसे हम वैज्ञानिक पक्ष कहते है, अध्ययन की दृष्टि से यही महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में इस दिशा में अनेकों महत्त्वपूर्ण शोध अनुसंधानों के कार्य सम्पन्न किये जा रहे हैं। यज्ञीय प्रक्रिया के अन्तर्गत ही यज्ञोपैथी चिकित्सा को भारतीय चिकित्सा प्रणालियों में एक समग्र और व्यापक चिकित्सा विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा है। ऐसे में यज्ञ से जुड़े ज्ञान–विज्ञान के महत्त्वपूर्ण आयामों के अध्ययन एवं प्रतिपादन की अत्यन्त आवश्यकता है। अध्ययनकर्ता का यह प्रयास उक्त आवश्यकता से प्रेरित होकर यज्ञ के मनोसंवेदनात्मक आयामों को प्रस्तुत करता है।

कूट शब्द: यज्ञ, मनोभावना, मनोसंवेदना

यज्ञ का अर्थ एवं महत्त्व

'यज्' धातु से यज्ञ शब्द बना है। जिसका अर्थ है– देव पूजा, संगतिकरण और दान। ईश्वरीय दिव्य शक्तियों की आराधना, उपासना, उनकी समीपता संगति तथा अपनी समझी जाने वाली वस्तुओं को उनको अर्पण करना यह यज्ञ की आध्यात्मिक प्रक्रिया है। देव गुण सम्पन्न सत्पुरूषों की सेवा एवं संगति करना तथा उन्हे सहयोग देना भी यज्ञ है। व्यवहारिक अर्थों में इसे यों भी कह सकते हैं कि बड़ों का सम्मान बराबर वालों से संगति, मैत्री, अपने से छोटों को कम शक्ति वालों को दान सहायता करना यज्ञ है। इस प्रकार ईश्वर उपासना, सत् तत्व का अभिवर्धन एवं पारस्परिक सहयोग भी यज्ञ माने जाते हैं। [1]

सदियों से चली आ रही ऋषि प्रणीत यज्ञ परम्परा में सन्निहित प्रेरणा एवं शिक्षा को समझा एवं अपनाया जा सके तो समस्त मनुष्य जाति की समग्र प्रगति, सुख और शान्ति का पथ प्रशस्त हो सकता है। [2] यज्ञ शब्द विशुद्ध रूप से सामूहिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। गीता में इस संदर्भ में विस्तृत विवेचना की गई है और उसे परमार्थ भावनाओं के साथ जोड़ा गया है। आप्टे की संस्कृति टू इंग्लिश डिक्शनरी में यज्ञ "टू सेक्रीफाइस' बलिदान त्याग के अर्थ में परिभाषित किया गया है। इसे व्यक्तित्व निर्माण के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। साथ ही उत्कृष्ट भावनाओं के लिए भी इसी क्रम में नेत्रदान यज्ञ, भूदान यज्ञ, ज्ञानदान यज्ञ आदि को परमार्थ प्रयोजन के लिए ही प्रयुक्त किया गया है, जिसका लक्ष्य लोक सेवा के माध्यम से आत्म–कल्याण का लक्ष्य प्राप्त करना भी समझा जा सकता है। [2]

एन. सी. बंद्योपाध्याय ने अपने ग्रन्थ "डेवलपमेण्ट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पॉलिटिकल थीअरीज" में इस तथ्य को स्वीकारते हुए ऋग्वेद के मण्डल 2 से मण्डल 9 तक की आने वाली अनेक ऋचाओं का हवाला दिया है। पश्चिमी मनीषी ए. बार्थ ने "रिलीजंस ऑव इण्डिया" में यज्ञ को मानव समाज और प्रकृति के बीच मधुर सम्बन्धों की व्यवस्था बताया है। [2]

यज्ञीय सिद्धांतों का मनोभावनात्मक स्वरूप

यज्ञ के ज्ञान–विज्ञान को जानने एवं अध्ययन करने की दृष्टि से आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी का चिन्तन एवं साहित्य सर्वथा उपयुक्त और सुलभ है। पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तको व वाङमय साहित्य आदि के माध्यम से आचार्य जी ने यज्ञ के सर्वांगीण पहलुओं की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की है। आचार्य जी के चिन्तन को आधार बनाकर ही इस अध्ययन में यज्ञ के मनोभावनात्मक आयामों को प्रस्तुत करने का प्रयास है। आचार्य जी के अनुसार यज्ञ का हमारे जीवन के स्थूल, सूक्ष्म और कारण–तीनों ही स्तरों से गहरा सम्बन्ध है। [3] ऋषियों ने यज्ञीय विधान को जीवन की सम्पूर्णता के विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अग्निहोत्र, हवन, यज्ञ आदि के रूप में जिस यज्ञीय परम्पराओं को स्थापित किया है उनका वर्णन भारतीय शास्त्रों में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। आचार्य जी यज्ञ के इन्हीं ऋषि सिद्धातों को समय के अनुरूप उपादेयता के आधार पर प्रस्तुत करते हैं।

यज्ञ के तीन प्रमुख पहलु कहे गये हैं – देवपूजन, दान और संगतिकरण। [4] देवपूजन का तात्पर्य है वे देव शक्तियां, जो जीवन और सृष्टि के संचालन में कार्य करती है, उन सभी शक्तियों को पुष्ट करने वाली भावनाओं का समर्पण। इससे व्यक्तित्व में सद्भावनाओं का विकास होता है। यज्ञ कर्त्ता आत्मकल्याण और लोककल्याण की भावना से यज्ञ कार्य में देव शक्तियों की पूजा और प्रार्थना करता है। इसका सीधा प्रभाव यज्ञकर्ता के अन्तःस्थल पर पड़ता है और फलस्वरूप उसकी आन्तरिक चेतना से द्वेष, ईर्ष्या, ण्ठा, ग्लानि जैसी सभी नकारात्मक भावनाओं की समाप्ति होती जाती है। देवपूजन के यज्ञीय दर्शन में भावनाओं के संवर्धन का विज्ञान समाहित है। [5]

यज्ञ का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलु दान है। [6] दान देवत्त्व एवं त्याग की अभिवृत्ति है। देने की भावना का विकास प्रकारान्तर से हमारे व्यक्तित्व की संवेदनशक्ति को विकसित और सुदृढ़ बनाती हैं। [7] दान दाता जिसे दान करता है या दान देने के लिए प्रेरित होता है तो उससे पहले वह दान प्राप्तकर्ता की पीड़ा , परेशानी, आवश्यकता आदि को अपनी संवेदनशीलता से अनुभव करता है। साथ ही दान देने के पश्चात दाता को एक अलौकिक प्रसन्नता और आनन्द की प्राप्ति भी होती है। यज्ञ का तीसरा पक्ष है– संगतिकरण। [7] संगतिकरण का तात्पर्य है – सत्प्रवृत्तियों–सद्भावनाओं से युक्त लोगों को संगठित कर आत्मकल्याण और लोक कल्याण के मार्ग पर चलाना। जीवन एवं समाज के महान उद्देश्यों में अच्छे भावनाशील लोगों की भागीदारी सुनियोजित करना। [8] यज्ञ के इन आयामों में समाहित मनोविज्ञान यह है कि व्यक्तित्त्व में सहकारिता, त्याग, परोपकार, सेवा, प्रेम जैसें जीवन के उच्चतम मूल्यों को प्राप्त किया जा सके।

यज्ञ के मनोवैज्ञानिक प्रभाव

यज्ञ के लिए प्रयुक्त साधन–सामग्री एवं कर्मकाण्ड मंत्रों का भी एक सूक्ष्म विज्ञान है। [8] यज्ञ का धुआँ वायुमण्डल का शोधन करता है तथा उच्चारित मंत्र शक्ति सूक्ष्म वातावरण को ऊर्जावान बनती है। वैदिक मंत्रों के स्वर–विन्यास एवं शब्द रचना ऐसी होती है कि उच्चारण करने वालों के व्यक्तित्व पर मंत्रोच्चार की ध्वनि तरंगों का सर्वदा सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। [8] इसकी ऊर्जा एवं भावना सुदूर क्षेत्रों तक बिखर कर स्थूल और सूक्ष्म वातावरण का परिष्कार करती है, इसीलिए ऋषि परम्परा में इसे मनुष्य जीवन के प्रत्येक श्रेष्ठ कर्मों के साथ जोड़ा गया है।

यज्ञ में सत्कर्मों और सद्भावनाओं को अर्जित करने का अनूठा विज्ञान समाहित है। देवत्व की प्राप्ति मनोभूमि की उच्चता और भावनाओं की पवित्रता जैसी कसौटी पर ही सम्भव होती

doi.org/10.36018/ijyr.v5i1.84

है। यज्ञ से यह सहज ही उपलब्ध हो जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यज्ञ को मनोभावनात्मक क्षमताओं के संवर्धन एवं परिष्कार का एक उत्कृष्ट और सुलभतम उपाय कहा जा सकता है। यज्ञ कार्य में कुविचारों–दुर्भावनाओं का कोई स्थान नहीं है। इनके स्थान पर यज्ञकर्ता सदैव सत्कर्म, चिन्तन और सद्भावना का अभ्यास करते हुये अपने व्यक्तित्व को समग्रता की ओर विकसित कर लेता है।

आधुनिक समाज में यज्ञ के इस उक्त महत्त्व को समझा जाने लगा है। यज्ञ से व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमताओं का शोधन एवं संवर्धन का लक्ष्य तो प्राप्त होता ही है, साथ ही यज्ञोपैथी के माध्यम से अनेक गंभीर शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों के उपचार एवं प्रबन्धन के सूत्र भी खोजे जा रहे है। [3] यज्ञ अब एक धार्मिक क्रिया मात्र न रहकर एक ऐसी समग्र उपचार पद्धति के रूप में भी स्वीकारा जा रहा है – जिससे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर अर्थात् सम्पूर्ण व्यक्तित्व की चिकित्सा और परिष्कार सम्भव है। [9]यज्ञ के इसी महत्त्व और विशेषताओं के कारण आचार्य जी ने इसे समूची सृष्टि का पिता कहा है। [10]

यज्ञ के मनोभावनात्मक लाभ

हम जिस प्रकृति पर निर्भर है उसका स्वभाव यज्ञ परम्परा के अनुरूप है। समुद्र बादलों को उदारतापूर्वक जल देता है, बादल एक स्थान से दूसरे स्थान तक उसे ढोकर ले जाने और बरसाने का श्रम वहन करते है। नदी, नाले, प्रवाहित होकर भूमि को सींचते और प्राणियों की प्यास बुझाते हैं। वृक्ष एवं वनस्पतियाँ अपने अस्तित्व का लाभ दूसरों को ही देते हैं। पुष्प और फल दूसरे के लिए ही जीते हैं। शरीर का प्रत्येक अवयव अपने निज के लिए नहीं वरन समस्त शरीर के लाभ के लिए ही अनवरत गति से कार्यरत रहता है। वैयक्तिक उन्नति और सामाजिक प्रगति का सारा आधार सहकारिता, त्याग, परोपकार आदि प्रवृत्तियों पर निर्भर है। यज्ञ में मंत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मन्त्रों में अनेक शक्ति के स्त्रोत दबे हैं। जिस प्रकार अमुक स्वर–विन्यास से युक्त शब्दों की रचना करने से अनेक राग–रागनियाँ बजती हैं और उनका प्रभाव सुनने वालों पर विभिन्न प्रकार का होता है, उसी प्रकार मंत्रोच्चारण से भी एक विशिष्ट प्राकर की ध्वनि तरंगे निकलती है और उनका भारी प्रभाव विश्वव्यापी प्रकृति पर, सूक्ष्म जगत पर तथा प्राणियों के स्थूल एवं सूक्ष्म शरीरों पर पड़ता है। यज्ञ की ऊष्मा मनुष्य के अन्तःकरण पर देवत्व की छाप डालती है। जहाँ यज्ञ होते हैं, वह भूमि एवं प्रदेश सुसंस्कारों की छाप अपने अन्दर धारण कर लेता है, और वहाँ जाने वालों पर दीर्घकाल तक प्रभाव डालता रहता है। प्राचीनकाल में तीर्थ वही बने है, जहाँ बड़े–बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरों में जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं, वह भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और वहाँ जिनका आगमन रहता है, उनकी मनोभूमि उच्च सुविकसित एवं सुसस्कृत बनती है।

निष्कर्ष

कुबुद्धि, कुविचार, दुर्गुण एवं दुष्कर्मों से विकृत मनोभूमि में यज्ञ से भारी सुधार होता है। इसलिए यज्ञ को पापनाशक कहा गया है। यज्ञीय प्रभाव से सुसंस्कृत हुई विवेकपूर्ण मनोभूमि का प्रतिफल जीवन के प्रत्येक क्षण को स्वर्गीय आनन्द से भर देता है। विधिवत् किये गये यज्ञ इतने प्रभावशाली होते हैं जिसके द्वारा मानसिक दोषों–दुर्गुणों का निष्कासन एवं सद्भावों का अभिवर्धन नितान्त सम्भव है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश संशय आदि मानसिक उद्वेगों की चिकित्सा के लिए यज्ञ एक विश्वस्त पद्धति है। यज्ञाग्नि के माध्यम से शक्तिशाली बने मंत्रोच्चार के ध्वनि, कम्पन सुदूर क्षेत्र में बिखरकर लोगों का मानसिक परिष्कार करते हैं, फलस्वरूप शरीर की तरह मानसिक स्वास्थ्य भी बढ़ता है। इसके साथ ही सम्पूर्ण यज्ञीय प्रक्रिया का अध्यात्मिक लाभ भी स्वतः प्राप्त होता है। इस प्रकार यज्ञ स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों स्तर पर अत्यन्त लाभकारी और सार्थक प्रभाव डालता है। यज्ञीय सिद्धांतों एवं विज्ञान के आधार पर हम यज्ञ रूपी इस सर्व सुलभ तकनीक से शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक लाभ तो प्राप्त कर ही सकते है, इसके अतिरिक्त अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का प्रत्येक स्तर पर (शरीर रोग, मनोरोग आदि सभी) समुचित समाधान भी यज्ञोपैथी के माध्यम से प्राप्त कर सकते है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

References

[1] Sharma Pandit. Yagya Ka Gyan Vigyan. 1st Edition, Akhand Jyoti Sansthan, Mathura:281003. 1995, Page 2.15.

[2] Sharma Pandit. Yagya Ka Gyan Vigyan. 1st Edition, Akhand Jyoti Sansthan, Mathura:281003. 1995, Page 2.20.

[3] Sharma Pandit. Yagya Ek Samagra Upchar Prakriya. 2nd Edition, Akhand Jyoti Sansthan, Mathura: 281003. 1998, Page 11.7, 11.11.

[4] Sharma Pandit. Yagya Ka Gyan Vigyan. 1st Edition, Akhand Jyoti Sansthan, Mathura: 281003. 1995, Page 2.19.

[5] Sharma Pandit. Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Gayarti Tapobhumi, Mathura: 281003. 2014, Page 23.

[6] Sharma Pandit. Yagya Ka Gyan Vigyan. 1st Edition, Akhand Jyoti Sansthan, Mathura: 281003. 1995, Page 2.18.

[7] Sharma Pandit. Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Gayarti Tapobhumi, Mathura: 281003. 2014, Page 24.

[8] Sharma Pandit. Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Gayarti Tapobhumi, Mathura: 281003. 2014, Page 25.

[9] Sharma Pandit. Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Gayarti Tapobhumi, Mathura: 281003. 2014, Page 26.

[10] Sharma Pandit. Karmakand Bhaskar. Revised Edition, Gayarti Tapobhumi, Mathura: 281003. 2014, Page 27.

doi.org/10.36018/ijyr.v5i1.84